The Study Centre will have to return the assignments to you after they are evaluated. Please insist on this. The Study Centre has to send the marks to the Student Evaluation Division at IGNOU, New Delhi.

We expect you to answer each question as per guidelines for each category as mentioned in the assignment. You will find it useful to keep the following points in mind:

1) **Planning:** Read the assignments carefully, go through the Units on which they are based. Make some points regarding each question and then rearrange them in a logical order.

2) **Organisation:** Be a little selective and analytic before drawing up a rough outline of your answer. Give adequate attention to your introduction and conclusion.

   Make sure that your answer:
   a) is logical and coherent;
   b) has clear connections between sentences and paragraphs, and
   c) is written correctly giving adequate consideration to your expression, style and presentation.

3) **Presentation:** Once you are satisfied with your answer, you can write down the final version for submission, writing each answer neatly and underlining the points you wish to emphasize. Make sure that the answer is within the stipulated word limit.

Wishing you all the best,
Faculty of History

BHIC 131: HISTORY OF INDIA FROM THE EARLIEST TIMES UP TO *C.* 300 C.E.
(TUTOR MARKED ASSIGNMENT)

Course code: BHIC-131
Assignment Code: BHIC-131/ASST/TMA/2026-2027
Marks: 100

Note: There are three Sections in the Assignment. You have to answer all questions in the Sections.

Assignment - I

Answer the following in about 500 words each.

1) Explain archaeological excavation. Discuss the some prominent archaeological sites in the Indian subcontinet. 20

2) Describe the main features of mature Harappen civilaization. 20

Assignment - II

Answer the following questions in about 250 words each.

3) Analyse the process of formation of some regions in ancient India. 10

4) Discribe the main features of the Mauryan administration. 10

5) Discuss the factors responsible for the rise of the new religious ideas in the sixth century B.C.E. 10

Assignment - III

Answer the following questions in about 100 words each.

6) Pre-vedic Religions. 6

7) Outline history of satavahanas dynasty. 6

8) Teachings of the Buddha. 6

9) Concept of Tinai. 6

10) Sangam in literature.

1) पुरातात्विक अन्वेषण को स्पष्ट कीजिए। भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ प्रमुख स्थलों पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर

पुरातात्विक अन्वेषण का अर्थ और पद्धति

पुरातात्विक अन्वेषण वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा अतीत के भौतिक अवशेषों को खोजा, दर्ज किया और उनके संदर्भ में समझा जाता है। इतिहास के बहुत पुराने चरणों के लिए, जब लिखित स्रोत उपलब्ध नहीं होते या बहुत सीमित होते हैं, तब पुरातत्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन जाता है। बस्तियों के अवशेष, औजार, मृद्भांड, मकानों की दीवारें, कब्रें, सिक्के, मुहरें, हड्डियाँ, बीज और धातु की वस्तुएँ हमें लोगों के जीवन, अर्थव्यवस्था और तकनीक के बारे में जानकारी देती हैं। अन्वेषण का उद्देश्य केवल वस्तुएँ इकट्ठी करना नहीं है, बल्कि यह जानना है कि वे कहाँ, किस स्तर पर और किन दूसरी वस्तुओं के साथ मिलीं। यही संदर्भ किसी अवशेष को ऐतिहासिक अर्थ देता है।

किसी क्षेत्र में कार्य शुरू करने से पहले पुराने मानचित्र, नदी-घाटियाँ, भू-आकृति, पहले से ज्ञात स्थलों और स्थानीय सूचनाओं का अध्ययन किया जाता है। उसके बाद पैदल सर्वेक्षण में शोधकर्ता निश्चित पट्टियों या क्षेत्रों में सतह पर दिखाई देने वाले मृद्भांड, पत्थर के औजार, ईंट, राख, असामान्य टीले या पुरानी दीवारों को दर्ज करते हैं। अब उपग्रह चित्र, जी.पी.एस. और जी.आई.एस. जैसी तकनीकें भी स्थल का स्थान और फैलाव समझने में सहायक हैं। चुने हुए स्थानों पर परीक्षण-खाइयाँ और फिर नियंत्रित उत्खनन किया जा सकता है। उत्खनन में स्तरक्रम का विशेष महत्व है, क्योंकि सामान्यतः नीचे के स्तर पहले और ऊपर के स्तर बाद के होते हैं। मृद्भांड की शैली, औजारों के प्रकार और अन्य वस्तुओं की तुलना से सापेक्ष कालक्रम बनता है, जबकि कार्बन-14 जैसे वैज्ञानिक परीक्षण उपयुक्त जैविक नमूनों की तिथि का अनुमान देते हैं।

अच्छा अन्वेषण पूरे क्षेत्र को केवल प्रसिद्ध बड़े स्थलों की दृष्टि से नहीं देखता। छोटे गाँव, मौसमी पड़ाव, उत्पादन-स्थल, कब्रिस्तान और कच्चे माल के स्रोत भी दर्ज किए जाते हैं। सतह पर वस्तुओं की घनता और फैलाव से बस्ती की सीमा का अनुमान लगाया जा सकता है। मिट्टी, परागकण, बीज, पशु-अस्थि और जल-स्रोतों का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि लोग किस पर्यावरण में